* श्रीः

के

पद्य

भारत वर्षीय जैन शिक्षा प्रचारक समिति, जयपुर.

बालचन्द्र प्रेस जयपुर.

ॐ

धर्म्म पाल नाटक के पद्य ।

नं० १

सब विघ्न विनाशक ज्ञान प्रकाशक श्री जिन राजा हो ।
सब विघ्न विनाशक ज्ञान प्रकाशक श्री जिन राजा सुख हो ॥
बिन राग द्वेष हे भगवान् आप पूज्य हो ॥ सब० ॥
देव लोकमें मनुज थोक में नाम आपका सुमरन हो ।
मुनिजन सारे तुमको ध्यावें ।
भवहर सुखकर शिवधर वृषधर गुणधर जिनवर प्रभुवर चिमन
सहायक हो ॥ सब० ॥ १ ॥

नं० २

की मो गुरुवाणी मोरी सहाय माता जिनवाणी महारानी ॥ की० ॥
अरिहंत मुख से तू निकली है स्याद्वादमय वाणी ।
आतमध्यानी तो को ध्यावें पावें शिव तिय रानी ॥ माता ॥
सप्त तत्व को तैं दरशायक सब का भरम मिटाया ।
लोका लोक स्वरूप बताया भविजन आनंद पाया ॥ माता० ॥
पूर्वापर में भेद नहीं कुछ हेतु न कोऊ बाधे ।
नैगम संग्रह आदिक नय से द्रव्यों को सब साधे ॥ माता० ॥
द्वादशांग में गणधर गुरु ने मुनिजन को सिखलाई ।
राग द्वेष तज देखें तोको उनहीं के मन भाई ॥ माता० ॥
जीव अनन्ता भवदधि तारे अविचल सुख सब पाया ।
चिमन सदा यह सेवक तेरा तव गुण निश दिन गाया ॥ माता० ॥

नं० ३

मंगल आधार विश्वं ज्ञातार सुखकार आ आ आ आ आ आ ।
कर्मचार भेत्तार साकार यह तोरी छवि न्यारी पै वारी बलि-
हारी ॥ मं ॥ २ ॥
परमातम पद धारी वाणीको विस्तारी तापैं वारी ।
पतित तारे लाखो चिमन शरण राखो ।
विनती तारी आ आ आ आ आ आ करत खरे नरनारी ॥ मं ॥ ३ ॥

नं० ४

मोहे तारो हो उवारो स्वामी आप सम जग तारना ॥
दुखहर सुखकर कहते हैं तोको आगम की साख प्रमान ।
राग रु द्वेष का लेश भी नांही सद्गुण ज्ञान की खान ।
मुझ दीन को उवार भव से लगादे पार ।
मम कर्म शत्रु ठार जिनका है मुझपे वार ॥
जिनवर देव ।
तू है सुखिया मैं हूं दुखिया निज सम मुझको कर जिनदेव ।
मैं अज्ञानी तुम प्रभु ज्ञानी निज मति मुझको दे जिनदेव ॥
मैं भववासी तुम भव नासी भव के दुख क्षय कर जिनदेव ।
सूख रहा यह चिमन काम का इस को ताज़ा कर जिनदेव ॥४॥

नं० ५

कहेंगे हाल जो देखा है हमने इस जमानेका ।
फ़कत अरमान है बिगड़ी हुई बाते बनाने का ॥
न तत्वों के समझने का न विद्या के पढ़ाने का ।

कला गुण ना सिखाने का वृथा आयू गंवाने का ॥
रुपें के व्यर्थ खोने का न शिक्षा में लगाने का ।
मिली हड्डी में जो चीनी उसे खाने खिलानेका ॥
न तिरिया के पढ़ाने का न भोजन शुध बनानेका ।
न कर्त्तव्य के सिखाने का न सीने का सिलाने का ॥
बताएँगे सुमारग सब करम दुख के मिटाने का ।
चिमन का काम है प्यारो जिनागम के बताने का ॥ ५ ॥

नं० ६

राजा हूँ तिहुं लोक का धर्म है मेरा नाम ।
जीवाजीव में वास मम निज गुण चर्या काम ॥ १ ॥
ज्ञान चन्द्र मंत्री सुधी बात एक सुन लेहु ।
प्रजा वर्ग की अर्जियां हम को तुम अब देहु ॥ २ ॥

नं० ७

पशु पक्षी मिल सब करें यह पुकार ।
हमारे दुखों को प्रभो अब निवार ॥
उदर त्रास अरु फांस से हम मरें ।
मनुष्यों की सेवा अहर्निश करें ॥
लदाते हमी भार हैं पीठ पर ।
मनुज को फिरें ले इधर अरु उधर ॥
मठा दूध मक्खन मलाई दही ।
मनुष्यों को मिलते हैं हम से सही ॥
पशू बिन भला खेत चलते कहीं ?

मनुष्यों के सब सुख पशू बिन नहीं ॥
फिरैं हैं जो पहिने यह वस्त्राभरन ।
वह देखो तो देता है पशुका बदन ॥
ज़रा भी सताते किसी को न हम ।
नहीं चैन जीवन का पर एक दम ॥
मनुष्यों पै उपकार जो हम करें ।
कृतघ्नी उसे सब भुलाही धरें ॥
हमें मार कर मांस भक्षण करें ।
हमारे बदन पर कटारें फिरें ॥
चढ़ावें हमें जीते जी सीख़ पर ।
चलें गोलियां हम पै ही तीख़ पर ॥
यदि कांटा इन के चुभे एक भी ।
तो सोवें न आनंद से फिर कभी ॥
हमें हा! जुबां से रहित देख कर ।
लगा तीर मारें बदन छेद कर ॥
जले आग से इनका कोई भी अंग ।
तो रो रो के करदें महोल्ले को तंग ॥
हमारे कहो क्या दरद हो नहीं ।
जो जीतों की काया अगन में दही ॥
कबूतर का भुर्त्ता करें तज दया ।
तड़पता रहे उसका कोमल हिया ॥
चहैं अपने पुत्रों की पूरी कुशल ।
पर अंडे हमारे न छोडे सबल ॥
धरम नाम पै यह हमें बध करें ।
बना शास्त्र कल्पित नहीं कुछ डरे ॥

सुनावें कहां लौं यह दुख की कथा ।
सहे सोही जाने है वेदन यथा ॥
तिहारी शरन आन हम अब परे ।
तिहारे ही आदेश से दुख टरे ॥
अनाथों की जानों की रक्षा करो ।
पशूगन की विनती प्रभो उर धरो ॥ ७ ॥

नं० ८

नहीं है आस जीने की मुझे अब लेश भी प्यारे ।
बढ़ा है रोग अब ऐसा हुए निर्जीव अंग सारे ॥
जुदाई की घड़ी में यह अरज़ है आख़िरी स्वामिन् ।
मेरे बेटे बह भोले उन्हें कुछ दुख न दे मोतिन ॥ ८ ॥

नं० ९

जीवन का सुख ना रहा अब जीना क्या ।
शून्य लगे घरबार मुझको जी ।
मेरी सुध अब कौन ले । खार लगे संसार ॥
मेरा न कोऊ यहां रहा । राम मौत अब देहु ।
जी मे तू भी ना हुई । राम उठा ही लेहु ॥ ९ ॥

नं० १०

हाय ! पैसा नहीं । कैसे पालूं भारी कुन्बा नादारी घनी ॥
सिरपै आई बेटी मेरे उसका व्याह है करना ॥
धंधा दीखे कुछ भी नांही किसका लूं मैं शरना ।
करूं कमी कुछ जीमन में तो होवे लोग हँसाई ॥

जाति वालों में कैसे बैठूं पूरी आफ़त आई ।
लगन किया था लल्लू का जब गिरवी रक्खा घरको ॥
बेटी की अब नौबत आई बेचूं क्या में सिर को ॥ १० ॥

नं० ११

छोटी सी छोकरी को ब्याह लिए जाय ।
ऐसा वह बूढ़ा हीये का फूटा छोटी सी छोकरी को ब्याह
लिए जाय ॥ देख देख
शिरको रंगाया सेहरा बंधाया चेहरे पै पौडर लगाय लिए जाय
डाढी रंगाई सूरत सजाई गोटे की पगडी लगाय लिए जाय ॥
बेटी सी दुलहिन बाबासा दूल्हा रोती २ छोकरी को वह
लिए जाय ॥ ११ ॥

नं० १२

आवो आवो चलें जिन पूजन को ।
जिनवर के चलो पद वन्दन को ॥ टेर ॥
गंगादि नीर से भरी हैं हेम झारियाँ ।
कुँकुमादि गन्धसे भरी हैं प्यालियाँ ॥ १ ॥
लेके अखंड शालि श्वेत पूर्ण थालियाँ ।
चम्पा गुलाब केतकी की लेके डालियाँ ॥ २ ॥
नैवेद्य फीनी गुंजा घेवर आदि रस भरे ।
करपूर तृप रत्न आदि दीप कर धरें ॥
दशाङ्ग धूप खेवते ही कर्म्म सब जरें ।
मातुलिङ्ग श्रीफलादि पक्व फल भरें ॥ ४ ॥

इनका बनाय अर्घ प्रभु चर्ण में धरे ।
होवे चिमन भी पार मुक्ति नारि को वरें ॥ ५ ॥

नं० १३

नाचो छुम छुम छुम प्यारी सखियन सब प्यारी गाओ जिन-
गुण सारी हा हा हा ।
श्रीजिनदेव सुगुरु की मूरत देखत ही सब पाप गए ॥
छुम छुम छुम छुम छुम छुम छुम छुम छुम छुम छुम छुम ।
दरशन पाए मंगल छाए गाओ जिन गुण सारी ॥
हा हा हा प्यारी हा हा हा ॥ नाचो० ॥ १३ ॥

नं० १४

मिल मिल भविजन करो जी ध्यान । निशि दिन करिए प्रभु
गुण गान ॥
जिनवरके सुमरण मे कर्मों का नाश प्यारे प्यारे हैं ।
जिन जी बगरजी भव सुखकार भवदुखहारी ॥ ध्यान०
मूर्ति जिनेश की राग न द्वेष की परम धरम सुमति दानी ॥
हा भवि कर्मों का चट पट झरना जिन सुमर भव सागर तरना
ध्यान०

नं० १५

मंगल नायक भक्त सहायक स्वामी करुणा धारी ।
प्रभू मंगल मूर्ति सुनामी चहुं घातिया चूर अकामी ॥
शीस नमाऊँ तव गुण गाऊँ तुम पर जाऊँ वारी ।

लगा के ध्यान आतम का चिदानंद रूप दिखलाया ।
जरा के कर्म रिपु आठों अमर पद आपने पाया ॥
बिना कुछ गर्ज के तुमने हिता हित ज्ञान बतलाया ।
गया जो गर्ज ले तुम पै वह खुद बे गर्ज हो आया ।
प्रभु राग द्वेष सब त्यागे घट ज्ञान अनन्ता जागे ।
विघन विनाशक ज्ञान प्रकाशक भविजन आनन्द कारी ॥

१

तुम्हारा देश भारतमें नहीं जब से हुआ आना ।
तभी से भेद निज पर का प्रभो हमने नहीं जाना ॥
पड़े हैं घोर दुःखों में सभी क्या रंक क्या राना ।
हुई भारत की यह हालत नहीं आब अरु दाना ॥
जहाँ मक्खन दूध मलाई वहाँ अन्न पै बाजी आई ।
यह पाप हमारा नशे हत्यारा पुण्य की हो बढ़वारी ॥

२

नहीं है ज्ञान की बातें न तत्वों की रही चरचा ।
नहीं उपयोग रुपये का बढ़ा है व्यर्थ का खरचा ॥
उठा व्यापार का धंदा गुलामी का लिया दरजा ।
छुड़ा के शिल्प शिक्षा को किया है देश का हरजा ॥
सब नोकर होना चाहते नहीं शिल्प कला सिखलाते ।
सब नोकर होके पेशा खोके निश दिन सहते ख्वारी ॥

२

धर्म के नाम से झगडे यहाँ पै खूब होते हैं।
बढ़ा के फूट आपस की दुखों का बीज बोते हैं॥
निरुद्यम आलसी हो द्रव्य अपने आप खोते हैं।
हुवा है भोर उन्नति का यह भारत वासी सोते हैं॥
हम मेल मिलाप बढावें कर उद्यम धन घर लावें।
भारत जागे सब दुख भागे यह ही विनती हमारी॥

नं० १६

देखो बेटा यह कैसा मारे मुझको है ऐसा।
चोरी करता गाली देता बेडर है ऐसा॥ १॥
मिनखा मरणी ही हो जावे घरमें रहने नांही पावे।
माल चुरावे हाथ उठावे बेटा यह कैसा॥ २॥

नं० १७

उठा के ऑख अब देखो जमाना कैसा आया है।
संभालो देश की हालत अंधेरा कैसा छाया है॥
मेरे प्यारे विचारो अब दरिद्री होगया भारत।
गई विद्या कला कौशल धर्म भी सब भुलाया है॥
जमाना एक था यहां पै मिले था अन्न मनभर का।
तुम्हीं देखो अकालों ने हमें आ आ सताया है॥
शरीरों से गई ताकत परिश्रम है नहीं हम में।
गई हिम्मत की सब बातें पड़ा रहना सुहाया है॥

कहूं कब तक विपत कहानी मेरे प्यारो तुम्हीं देखो ।
जगा दो ज्योति विद्या की भला इसमें समाया है ॥ १७ ॥

नं० १८

प्यारो जरा विचारो कहता जमाना क्या है ।
गफ़लत की नींद त्यागो देखो जमाना क्या है ॥ १ ॥
विद्याकी धूम छाई चहुं ओर मेरे भाई ।
विद्या बिना तुम्हारा जीना जिलाना क्या है ॥ २ ॥
काले गँवार तुम्हको विद्या बिना बताते ।
डूबी तुम्हारी इज्जत तुमको ठिकाना क्या है ॥ ३ ॥
संतान किसकी तुम हो पुरखा तुम्हारे कैसे ।
इतिहास कह रहा है मेरा बताना क्या है ॥ ४ ॥
शिक्षा अगर न दोगे मूरख यों ही रखोगे ।
संतान होगी दुखिया मेरा जताना क्या है ॥ ५ ॥
विद्या के जो हितेच्छू उनके बनो सहाई ।
नुक्तों में द्रव्य प्यारो विरथा लगाना क्या है ॥ ६ ॥
उठके कमर कसो अब विद्या का चौक बांधो ।
भारत चमन खिले तब सोना सुलाना क्या है ॥ ७ ॥

नं० १९

हाय बुढ़ापा खागया । हाय बुढ़ापा खागया ।
आंखें फूटी दांत भी टूटे हाथों को लकुवा मार गया ॥
भूख लगे ना खाना पचे ना अंगों में आलस छागया ।
मेरा बुढ़ापा उसकी जवानी करनी का फल पा गया ॥

मेरी सूरत पै नाक सिकोडे योवन का गुर्रा आगया ।
घर बिगाडे घरको उजाडे पीहर में रहना भागया ॥

नं० २०

चल चल सजनी क्षपक श्रेणी कर्म क्षय होजाँय ।
तिहुं दर्शन मोहिनी जावें चहुं बन्ध अनन्त खपावें ॥
सोवत आतम जागै सजनी अव्रतगुण जब पाय ।
फिर चौक दूसरा ढकिए व्रत श्रावक के तब धरिए ॥
निज गुण चर्या करें शुरू जब पंचम गुण पै आय ।
कर चौक तीसरा उपशम, धर पंच महाव्रत शम दम ॥
अक्षय चारित पालो सजनी छट्ठे गुण पै आय ।
जब अनिवृत गुण पै आवें पैंतीस प्रकृति खपावें ॥
दशवें गुण पै चढ़ो सखीरी इकसत दो रह जाँय ।
गुण ग्यारह में नहीं जाना हो निश्चय नीचे आना ॥
क्षीण मोह में चढ़ो सखीरी मोह शत्रु नश जाय ।
फिर घातिय चार नशाओ तब केवल ज्ञान उपाओ ॥
योग सहित गुणठाण तेरहवां श्री अरिहंत लहाय ।
जब योग रहित गुण पावें लघु अक्षर काल बितावें ॥
अष्ट कर्म सब नाश होय जब चिमन सिद्ध हो जाय ॥ २०

नं० २१

पशु बध की नहीं इच्छा हम को ।
जीव दया हम चाहते है ॥
भोग न करते हम तो कुछ भी ।

मनुष्य आप ही खाते हैं ॥
ईश्वर को नहीं क्षुधा तृषादिक ।
निष्फल भोग चढ़ाते हैं ॥
अपनी रसना पोषण कारण ।
यह सब रोग लगाते हैं ॥
काबे के चहुं ओर द्वादश कोश तलक इत नहीं जीव मरें ।
बड़े पशुन की बात कहाँ जहाँ कीड़ी के नहिं प्राण हरें ॥
इस आज्ञा को जो नहिं पाले वह नर दोजख मांहि परे ।
काबे बाहर कुरबानी फिर कैसे स्वर्ग में जाय धरे ॥

नं० २२

पतित उधारक शिव सुख कारक स्वामी करुणा कीजे ।
हम भ्रमत चतुर गति हारे, नहीं तुम बिन कोउ दुख टारे ॥
करुणा सागर सब गुण आगर भवदधि पार करीजे ।

शेर

भरी अरु कहत मारी सब हमी को आ सताती हैं ।
बलाएँ जो कि हैं सारी हमी को आ दबाती हैं ॥
कषाएँ फूट नादारी सदा हम को जलाती हैं ।
गई भारत की वह हालत जो इतिहासें जताती हैं ॥
यह भारत वर्ष हमारा सहे दुःख अनेक प्रकारा ।
यह भारत नैया पार लगाओ करुणा कर सुख दीजे ॥

कला कोशल हमारा सब गये हैं भूल अरसे से ।
उठीं तत्वों की चर्चा शोक भारत के मदर्से से ॥
ज्यो था दुनियां का शिक्षक वह अविद्या बश सहे ख्वारी ।
निकलते हैं सहस्रों दास बन २ के मदर्से से ॥
हम ज्ञान बुद्धि कर हीना पर बन्धन फस भए दीना ।
यह कुमति हमारी नशे दुखारी सुमति ज्ञान भर दीजे ॥
गँवा के व्यर्थ व्यय में सब रुपा हो बैठे हैं खाली ।
मिटा या धर्म्म सब अपना विदेशी चीनी खा डाली ॥
स्वदेशी को घृणा से देख अपनी खाक कर डाली ।
प्रभो करुणा करो हम पै किये की हम सजा पाली ॥
हम वैर विरोध मिटावें निज भारत देश जगावें ।
यह चमन हमारा करे पुकारा भारत की सुधी लीजे ॥

नं० २३

ईश्वर की जब सृष्टि बताई पशु क्या उस से बाहर है ।
पशु बध की फिर आज्ञा ईश्वर कैसे देगा जाहिर है ॥
मनुष्य मात्र सब कहते ईश्वर करुणा गुण का सागर है ।
पशुका होम यज्ञमें रामन् अदया दुर्गुण आगर है ॥
भक्ति हमारी करने वाले इष्ट फलों को पाते हैं ।
पशु बध अथवा इतर भोग का अंश भी हम नहिं चाहते है ॥
व्यर्थ हमारी खातिर जो कोऊ पशु का गला कटाते हैं ।
पाते है वे करणी का फल हम नहीं आन बचाते हैं ॥

नं० २६

राजा प्रजा रहैं नित आनंद में।
जिन धर्म्म बढ़ो सब जीवन में॥
काल काल पै वर्षा होवे रोग व्याधि सब दूर रहैं।
विद्या का हो घर घर आदर सम्पति से भरपूर रहैं॥
भारत की है जैनसमिति शिक्षा का प्रचार करै।
सुखी होहु सब भारतवासी श्री जिन बेड़ा पार करै॥